

# Mahashivaratri Puja

Date	:	16th March 1997
Place	:	Delhi
Type	:	Puja
Speech Language	:	Hindi & English

## CONTENTS

### I Transcript

Hindi	02 - 06
English	07 - 09
Marathi	-

### II Translation

English	10 - 12
Hindi	13 - 15
Marathi	16 - 20

# ORIGINAL TRANSCRIPT

## HINDI TALK

Scanned from Hindi Chaitanya Lahari

(First, I will speak in Hindi language and then in English. We are such a cosmopolitan people that I don't know what language to take to. [Shri Mataji speaks in Hindi])

आज हम लोग शिवजी की पूजा करने जा रहे हैं। शिवजी के स्वरूप में एक स्वयं साक्षात् सदाशिव हैं और उनका प्रतिबिम्ब शिव स्वरूप है। ये शिव का स्वरूप हमारे हृदय में हर समय आत्मस्वरूप बन कर स्थित है। ये मैं नहीं कहूँगी कि प्रकाशित है। जब कुण्डलिनी का जागरण होता है तो ये शिव का स्वरूप प्रकाशित होता है और वो प्रकाशित होता है हमारी नसों में। चैतन्य के लिए कहा है 'मेदेस्थित', प्रथम 'इसका प्रकाश हमारे मस्तिष्क में, पहली मर्तबा हमारे हृदय का और हमारे मस्तिष्क का योग घटित होता है। नहीं तो सर्वसाधारण तरह से मनुष्य की बुद्धि एक तरफ और उसका मन दूसरी तरफ दौड़ता है। योग घटित हो जाने से जो प्रकाश हमारे अन्दर आत्मा से प्रगटित होता है वो चैतन्य स्वरूप बन कर हमारे हाथों और तालू से प्रवाहित होता है। ये तो आप लोग जानते हैं; पर आगे की बात समझने की यह है कि जब यह प्रकाश हमारे अन्दर आता है तो धीरे-धीरे हम देखते हैं कि हमारी जिन्दगी बदलने लगती है, हमारे अन्दर का क्रोध और हमारे जो षटरिपु हैं वो खत्म होने लगते हैं। धीरे-धीरे सब चीजें गिरती जाती हैं और मन में श्रद्धा प्रस्थापित होती है। श्रद्धा में त्यागबुद्धि जागृत होती है, किसी

भी चीज़ का महत्व नहीं रह जाता।

अब शंकर जी की जो हमने एक आकृति देखी है, एक अवधूत, पहुँचे हुए, एक बहुत कोई औलिया हो, उस तरह के हैं। उनको किसी चीज़ की सुध-बुध नहीं, बाल बिखरे हुए हैं, जटा जूट बने हुए हैं। कुछ नहीं, तो बदन में कौन से कपड़े पहने हुए हैं, क्या कहें, इसका कोई विचार नहीं। ये सब काम उन्होंने नारायण को, विष्णु को दे दिया है। वे स्वयं मुक्त हैं। व्याघ्र का चर्म पहन कर घूमते हैं और उनकी सवारी भी नन्दी की है जो किसी तरह से पकड़ में नहीं आ सकते। कोई घोड़े जैसा नहीं कि उसमें कोई लगाम हो, जहाँ नन्दी महाराज जायें वहाँ शिवजी चले जाएं। उनको किसी चीज़ में कभी ये ख्याल नहीं आता कि लोग क्या कहेंगे, दूसरों का क्या विचार होगा ? हम अगर ऐसे कपड़े पहनकर और नन्दी पर बैठकर इधर-उधर भटकें तो लोग हमें क्या कहेंगे ? क्योंकि वो अपने ही अन्दर समाये हुए हैं। अपने ही खुशियों में बैठे हुए हैं। उनको कोई भी संसार से ये मतलब नहीं है कि दुनिया हमें क्या कहेगी, लोक-लाज क्या होती है। ये तो इनके विवाह में भी आपने वर्णन सुना होगा कि जब ये विवाह करने आए तो श्री विष्णु ने जब देखा तो उन्होंने सोचा कि ये क्या दूल्हा मेरी बहन

के लिए आया है, बेकार सा! इससे कैसे मेरी बहन शादी करेगी? लेकिन पार्वती जी जानती थीं कि उनके योग्य यही पति है जो एक मस्त-मौला आदमी है। किसी चीज़ की उनको कद्र नहीं है। सब चीज़ों से जब आदमी ऊपर उठ जाता है तो उसके लिए सब चीज़ एक किञ्चित पदार्थ हो जाती हैं। उसका ध्यान इस ओर नहीं जाता।

ये शिवजी का जो अवतार हम लोग देखते हैं हमें बहुत प्यारा लगता है, मोहक लगता है और सब लोग सोचते हैं कि शिवजी का सारा ही काम कुछ तो भी विशेष है। लेकिन जब सहजयोगियों में शिवजी का प्रकाश आ जाता है तो उनका भी जीवन बदलने लगता है। मैंने देखा है कि जैसे पहले सहजयोग में आए, औरतें भी, आदमी भी, सब सजना-धजना शुरू कर देते थे। सारा ध्यान इसी में रहता था कि आज क्या पहनें, कल क्या पहनें, और आजकल तो इसका प्रादुर्भाव बहुत हो गया है क्योंकि सब जगह बहुत सारे सौन्दर्य प्रसाधन गृह निकल आए हैं, ये हैं, वो हैं, तो औरतें इसमें बहुत फँसी हैं। पर जब आपके अन्दर से निखार, आपके सौन्दर्य का, इस प्रकाश से आता है तब इन सब चीज़ों का कोई महत्व नहीं रह जाता। उसी तरह आराम, आराम भी एक तरह से आत्मा का ही आराम मनुष्य खोजता है। अपने आराम से दूर रहता है। इसमें जो परदेशी लोग हैं, इनको देखिए, ये बड़े-बड़े घरों में रहते हैं, इनके पास मोटरे हैं सबकुछ, रईस हैं। पर यहाँ आते हैं तो हर जगह समा जाते हैं। पर हिन्दुस्तानियों का ये हाल नहीं

है। हिन्दुस्तानी अब भी जहाँ जाते हैं उनको बाथरूम चाहिए साथ जुड़ा हुआ। पता नहीं और दुनिया भर की चीज़ें। अभी तक इससे उठ नहीं पाए हैं। स्वभावतः मुझे आश्चर्य होता है कि अपने गरीब देश में भी लोगों में अभी काफी कामनाएं बची हैं। बड़े आश्चर्य की बात है! हमें लोगों ने कहा कि माँ एक आश्रम के लिए एक बड़ी सी जगह ले लें। हमारे हिन्दुस्तानी कभी आश्रम में रहते नहीं। अब ये आश्रम जब हम लोगों ने बनाया, इतनी मेहनत से, खर्च करके तो इसमें रहने के लिए कोई तैयार नहीं। हमने कहा बाबा हम तुमको तनख्वाह देते हैं, तुम रहो। पर तैयार नहीं। मेरा जो जन्मस्थान है, छिन्दवाड़े में, उस घर के लिए इतना रुपया-पैसा खर्चा किया और मैंने कहा जो रिटायर हो गए हैं वहाँ रहें। बड़ी अच्छी आबो-हवा है, पहाड़ी स्थान है। कोई रहने को तैयार नहीं। सब अपने आराम को सोचते हैं। इन लोगों में यह बात नहीं है। वे लोग आश्रमों में बड़े सुख से रहते हैं। मेरा घर, मेरी जगह, मेरी बीवी, खाना बनना चाहिए इस तरह से ये यही खाना खाएंगे। हम लोग इतने स्वाद में उलझे हुए हैं। इन लोगों में ये स्थिति नहीं है। हिन्दुस्तानी खाना भी शौक से खाते हैं। लेकिन मुझे मालूम है कि जब हिन्दुस्तानी कबेला आते हैं तो अपनी रोटियाँ, परांटे-वरांटे, अचार-वचार बाँध के लाते हैं क्योंकि उनके जीभ से नहीं उतरेगा। सभी तो जीभ में ही फँसा हुआ है। सो ध्यान करने से जब तक ये चीज़ें छूटेंगी नहीं तो आप धर्म से परे नहीं जा सकते। एक छोटी सी बात समझने की है



कि त्याग में भी हम लोग कम पड़ जाते हैं। इस बार इन्होंने कहा कि माँ आप इतनी बड़ी जमीन ले रहे हैं, इतना खर्चा कर रहे हैं, तो पूजा के लिए थोड़ा सा ज्यादा पैसा कर दो। न जाने कितनी चिट्ठियाँ मेरे पास आई कि आप पूजा का पैसा कम कर दीजिए, पूजा का पैसा कम कर दीजिए। अरे भई एक बार दिल्ली में पूजा हो रही है उसमें भी चिट्ठियों पर चिट्ठियाँ। पान खाकर लोग फेंक देंगे लेकिन पूजा में जरूरी है पैसा देना! आपसे पहले हमने कोई पैसा नहीं लिया। सारी चीजें अपने ही दम पर सब करी। लेकिन इतना सा कहते ही आज आधा मण्डप खाली है। क्यों? क्योंकि पूजा का पैसा नहीं देना। फोन करते हैं कि हमारी पूजा माफ कर दीजिए। अरे भई आप कोई कम नौकरी हो ऐसा नहीं है। हमारे पति देंगे मैं नहीं दूंगी। मुझे बड़ा आश्चर्य होता है। अभी अगर कोई औघड़ गुरु होते तो आप लोगों के सबके बाल मुंडा कर और आपको गेरुआ वस्त्र पहनाकर सर के बल खड़ा कर देते। लेकिन मैं यह नहीं चाहती, क्योंकि सहज की बात है। सब चीज़ सहज में आना चाहिए। हमने बहुत लोगों को त्याग करते अपने जीवन में देखा है। और आजकल लोगों में मैंने वो देखा ही नहीं। हमारी माँ का मुझे मालूम है कि छःसाड़ियों से सातवीं साड़ी उनके पास हो जाए तो दे डालती थीं। वहाँ भी लोग आते हैं कबेला में तो आश्चर्य होता है कि उन्हें अलग से कमरा चाहिए, घर चाहिए, अलग से रहेंगे। सबके साथ नहीं रहेंगे। जो सब के साथ मिलकर रह

नहीं सकता वह सहजयोगी नहीं है। वो अभी भी सोचता है कि मैं कोई विशेष हूँ, मेरा अलग सब इंतजाम होना चाहिए। वो सहजयोगी नहीं हो सकता। वो नाम मात्र को सहजयोगी हैं। जो शंकर जी का भक्त है उसको शंकर जी जैसा होना है। कहीं भी सुला दो, कहीं भी बैठा दो, कुछ भी खाने को दो, उसको किसी चीज़ से कोई मतलब नहीं है। समय की पाबन्दी नहीं, किसी चीज़ की माँग नहीं; ऐसा ही आदमी, हम कह सकते हैं, सहजयोगी है।

शिवजी का आपके अन्दर प्रादुर्भाव हो गया। लोग तो इसको प्राप्त करने से पहले ही न जाने क्या-क्या कर्म करते हैं। और किसी पद्धति में आप जाइए वो आपके सारे पैसे नोच लेंगे, आपके सारे बाल नोच लेंगे, पता नहीं क्या-क्या करेंगे। सहजयोग में ऐसा नहीं है। लेकिन ये वृत्ति, जो अब भी हमारे अन्दर बनी हुई है, इसको छोड़ना चाहिए। यह प्रयत्न करना चाहिए कि हम क्या-क्या चीज़ छोड़ सकते हैं। जब तक ये मस्ती आपके अन्दर नहीं आएगी तब तक आपको शिवजी का भक्त नहीं कह सकते। माता जी के तो हर तरह के भक्त हैं। उसकी कोई विशेषता तो है नहीं। सब तरह के भक्त हैं, चाहे जो भी करें, चलो माँ ही है, माँ माफ कर देती हैं। पर माफ कर देने से आप उस पद को प्राप्त नहीं कर सकते। माफ करने की बात सबसे बड़ी यह है कि शिवजी से हर समय माफी माँगनी चाहिए, हर समय क्षमा माँगनी चाहिए, क्योंकि पग-पग हम ऐसे काम करते हैं जो हमें नहीं करना

चाहिए। उनसे क्षमा माँगनी चाहिए कि, हे शम्भो हमें क्षमा कर दें। हम ये गलती करते हैं, हम वो गलती करते हैं, हमारे अन्दर ये जरूरतें हैं, हमारे अन्दर वो जरूरतें हैं, हमको ये चाहिए, हमको वो चाहिए। जब तक चाहिए, अपने अन्दर हैं, तब तक आप परमात्मा से क्षमा माँगे। मेरा घर, मेरी बीवी, इस तरह एक अधिकार की भावना, जो हमारे अन्दर है, इसको जब हम छोड़ नहीं सकते तो हम शिवजी के भक्त नहीं हो सकते। इस मामले में आश्चर्य की बात है कि परदेश के लोगों ने तो इतना पा लिया, जिन्होंने कभी सुना भी न था शिवजी का नाम और हम लोग अभी भी उसी में चिपके हुए हैं, और उसी को इतना मानते हैं।

शिव होने का मतलब यह है कि सर्वथा दुनिया भर की जो हमारे अन्दर लोलुपता है, जो हमारे अन्दर नफरत है, जो हमारे अन्दर दुष्टता है उसको छोड़ देना है। पर मनुष्य सहजयोग में आने पर भी अपने को देख नहीं पाता। मैंने सुना एक सास हैं जो अपनी बहू को सता रही हैं। मैंने कहा तुम क्यों सता रही हो तो वो कहने लगी मैंने तो सताया ही नहीं। सिनेमा में जाएंगे, देखेंगे कोई सास बहू को सता रही है तो रोएंगे, वही और घर में आकर बहू को सताएंगे या बहू सास को सताएगी। लेकिन कहेंगे कि मैंने कभी किसी को सताया ही नहीं। इस तरह के झूठ को अपने आवरण में रखकर सहजयोग में आप उठ नहीं सकते। क्योंकि ये आप की जिन्दगी बदल देता है,

इससे तो आपका सोना हो गया और सोने पर तो कोई कलंक लग ही नहीं सकता, उसपे कोई चीज चढ़ ही नहीं सकती। वो अब आप हो गए हैं, उस स्थिति को प्राप्त करें। अब भी क्यों ये गुलामी दुनिया भर की चीजों की ? यही कुण्डलिनी की विशेषता है कि यह आपको पूरी तरह से सफाई में डाल देती है। सेवा, हाँ भई सेवा भी करनी चाहिए, पर मुझे तो कोई सेवा खास आपकी चाहिए नहीं। मैं खुद ही मस्त—मौला हूँ मुझे आप क्या सेवा देंगे? सिर्फ ये है कि आप अपने अन्दर ये मस्त—मौलापन ले आइए। एक आनन्द में विभोर रहने पर ये सोचना चाहिए कि यह सब चीजें कुछ तो आनन्द ही के लिए हैं और वो आनन्द हमको अगर मिलता ही है बगैर कुछ किए तो ये सब करने की क्या जरूरत है ?

बहुत कुछ सोचने पर मैं इस नतीजे पर पहुँची हूँ कि सहज जो है वो है तो बहुत सरल और इसलिए बहुत कठिन है। अगर कोई डण्डा लेकर खड़ा हो और कहे कि चलो सब बाल मुंडाओ, गेरुए वस्त्र पहनो, 14 दिन तक भूख हड़ताल, तो हो गया। उसमें ठीक हो जाते हैं। पर जो सहज है उसको अपने हृदय से, अपने मन से, अपनी बुद्धि से स्वीकार्य करके और उसमें अपनी ही ताड़ना करना, अपने को ही ठीक करना, मैं ऐसे क्यों करता हूँ ? ऐसा मुझे करना चाहिए क्या ? इसमें बहुत कुछ छूट जाएगा और इससे एक तरह से आप अपने को पाइएगा कि आप समर्थ हैं।



आपको कोई चीज़ की गरज नहीं, आपको कोई चीज़ की इच्छा नहीं, बस बैठे हैं आराम से। और आश्चर्य की बात है कि जब चैतन्य यह जानता है कि आपको कोई चीज़ की गरज नहीं तो आपके सामने थाली परोस कर लाता है। हो सकता है प्रलोभन के लिए हो। फिर देखिएगा आपको क्या है। **कोई आपकी जरूरत ऐसी है ही नहीं जो पूरी नहीं कर सकता।** पर इसमें थोड़ी सी लगन होनी चाहिए।

आज शिवजी का हम लोगों ने इतना आद्वान किया और उनको तो ऐसे लोग अच्छे लगते हैं। उनमें हममें यही फर्क है कि हमें सब तरह के लोग अच्छे लगते हैं उनको नहीं। उनको ऐसे ही लोग अच्छे लगते हैं जिन्होंने ये सब छोड़ दिया। ये सब व्याधियाँ हैं हमारे अन्दर। एक-एक चीज़ में कि भई कपड़े ऐसे पहने, नहीं पहने तो क्या हो जाएगा ? लेकिन हमारे यहाँ सन्यास बाह्य का नहीं माना जाता, अन्दर से; अन्दर से आप सन्यस्थ हो जाएंगे और सन्यस्थ होने पर कोई भी चीज़ की कामना नहीं रह जाती। जहाँ है वहीं मस्त बैठे हैं। पहले

नाथ लोग थे, वे भ्रमण करते थे, दुनिया भर में जाते थे। और उन्होंने बहुत कुछ लोगों को शिक्षा दी। मैं तो हैरान हुई कि ये लोग कहाँ-कहाँ पहुँचे थे। कोलम्बिया में गई थी तो वहाँ पता हुआ कि बोलीविया में ये लोग आए थे। अब कोलम्बिया में अगर आप जाएं तो हवाई जहाज में चक्कर आने लगते हैं, इतना ऊंचा है। और उस वक्त तो सब पैदल ही लोग जाते होंगे! तो ये गए कैसे होंगे ये ही समझ में नहीं आता ? रूस में, रूस के और भी देशों में इनका भ्रमण हुआ, और कैसे करते थे, कहाँ रहते थे, क्या पहनते थे, कुछ पता नहीं। क्योंकि वो दशा आ जाती है फिर आप एक चमत्कार पूर्ण इन्सान हो जाते हैं। जैसा हम जानते हैं कि शिरडी के साईनाथ, कहीं भी उद्भव होता है उनका, वे कहीं भी आते हैं। कहीं भी किसी की मदद कर देते हैं। लोग कहते हैं माँ हमने तो उनको देखा, हाँ देख सकते हैं, क्यों नहीं ? ऐसे लोग अमर हो जाते हैं क्योंकि उनकी मारने वाली जो वृत्तियाँ हैं खत्म हो गईं। फिर वो अमर हो जाते हैं और इसी अमरत्व को प्राप्त करना ही शिवजी की पूजा है।

# ORIGINAL TRANSCRIPT

## ENGLISH TALK

I am talking to them about Shiva's worship – what should happen to you. But today, I am going to tell you about the internal happening within us when you get your realization. There are eleven rudras placed here – eleven rudras. They are particles, we can say, anshas as they call it, of Shiva's powers. And all of them try to take out, or to remove all the false ideas we have about life. When the Kundalini rises, they all get enlightened - eleven of them. And, say for example, Buddha had a part of that; Mahavira had a part of that. Now, all of them, what they do is to control us from falling into the prey of various things. Like, we have an ego. So, Buddha will look after the ego part. He will see that you get shocked by your ego. You will be quite amazed how you could be so egoistical, and so insulting, and so humiliating. But when this rudra is not awakened, when there is no light in this rudra, then what happens? You start justifying yourself. You think whatever you do is correct, whatever you've done, whatever you've said, whatever you have achieved, you think is your right. You've done nothing wrong. For that, this Buddha's rudra has to be awakened.

On the contrary, if you go on pampering your ego, if you go on becoming egoistical, you become absolutely a right-sided personality. Once you are a right-sided personality, you know what all the symptoms there are of such a person. Now, for that if you just watch and introspect and see for yourself what ego has done to you, what wrong ideas you had about yourself. So that's why Mohammed Sahib has said, "Beat yourself with shoes." He didn't know what else to tell. Because this ego business can really burst you, your head completely, and you may land up into so many difficulties. Ultimately, I have seen people developing this yuppie's disease where the conscious mind becomes absolutely useless, cannot move. Consciously people cannot move. Unconsciously they will, but not consciously. And this disease is so horrible. A person becomes like a reptile. You have to carry them on your body. They can't walk on their own. They can't sit on their own. In a very young age this can happen. This is happening in America. Also, I have seen two, three cases here, in India, also such a thing is happening.

So if you do not try to see your ego and control it, and feel repentant about it. In Sahaja Yoga, there is nothing like repentance, we don't believe in repentance. Because we believe that you all have got your realization. You are beyond any mistakes. It's not true. We have to repent. There's a, in English, there is a word – sorry. Sorry, for everything they will say sorry. Even telephone if you pick up, they'll say, "sorry." I say, "Sorry, for what?" But this sorry itself is very empty. It has no meaning. It has no depth. When you say "sorry," you have to see why you are saying "sorry," and what is to be corrected. This is a very big problem of today's generation where people have developed such tremendous ego - because all our economic growth, all our industrial developments, all our big, big organizations, all of them have given us a way that we should all develop our ego. If we don't develop our ego, we will be lost; we are nowhere. And that's how we start pampering it, and then this right-sided problem starts. Then as a reaction, it goes to the left side.

Actually, in the head it is on the right side. Here is the right side ego comes up, so the left rudra is that of Mahavira. So people do things, which are sinful, which are wrong, which are against Shri Ganesha. Then also there are controlling powers of Mahavira, who controls. He says, "You will go to hell. This will happen." He describes all the hell, all kinds of hell, that you'll go to hell and you'll be burnt alive - I don't know, all kinds of things He describes to frighten you. But that doesn't help. So people start getting more onto the left side and, I should say, through this rudra, when this rudra gets helpless, then a tremendous depression comes in. One feels very depressed. "Oh God. What a depression I have. I am so sick. I am this thing." And then you try to frighten others with your

depressions. You show sort of a, what you call, a emotional blackmail you do. All kinds of things you will do, and beat your head and do all kinds of things. Could be through ego, could be through this left side problem of the left rudra.

These two rudras are very important because they are directly connected with our left and right sympathetic nervous system. So, it's very important to see that you don't fall a prey to these rudras. These rudras are to be satisfied. So to be normal, at least look after these two rudras, which are: one is one who controls the ego, and another is self-pity. "I just can't do it, I'm this, that" and all kinds of depression. All this works out into, physically also, into very serious problems like cancer. If the rudras are caught up, you develop cancer. But all this portion gets swollen up. It's called as the medha. This all portion gets swollen up, and you can see a cancer patient having a swelling all over. At least would be here, or may be there. Because such a swing in the nature of a person that you can't say from which rudra they have developed these psychosomatic troubles.

Psychosomatic troubles, all of them, come because the rudras have become ineffective. It can be due to the depressive nature or oppressive nature. It could be due to many other factors also. But all these factors are nothing but part and parcel of Shri Shiva's, or Sadashiva's powers. He is the one who is full of karuna - full of compassion. He is the ocean of compassion. If you ask Him forgiveness, He will forgive. Whatever you do, instead of feeling guilty if you ask forgiveness, then He forgives. But if you think you, whatever you've done is good, you've never tortured anybody, you have never made anybody suffer, then it knows. Shiva knows everything, isn't it? And, because it knows, it starts giving up. So there's a big combination of your will power to be there, and the combination of the blessings of Shiva. When the Shiva blesses you, your will power also heightens. But you must have full will power to know that you have to be of a higher level of personality. He was not at all a mundane type. I mean He was... supposing, ask Shiva to go to some party and all that, how will He look there? People will laugh at Him.

When I met some hippies, I said, "Why are you having this kind of hair?" So they said, "We want to..." They are all primitive. So he said, "I want to be primitive." I said, "But the brain is modern. What's the use of having primitive hair?"

So, deception; Deceiving yourself is not going to help. Best thing is to face yourself and understand what wrong you have been doing. If it works out, I tell you, so many Sahaja Yogis you are sitting here. If you correct yourself and become that, I am sure all the problems - political, economic, and all stupid problems we have - will be finished. But today it's such a mixture, due to Kali Yuga, that even the worst people are carrying on.

Now, we have a responsibility to save this world. We have a responsibility to create a great, honorable life, which is not superficial, which is not just to show off. But inside it should develop so that this light of your spirit spreads and enlightens this world. It's very important to understand all these troubles and these, I should say, diseases, psychosomatic diseases, and all other problems which are, in a collective way we can call, of the Kali Yuga like political, economic, all these problems - only are created by human beings. They are not created by the Divine Force. But Divine Force tries to neutralize them if there are many Sahaja Yogis who are practicing Sahaja Yoga in the real sense of the word. If that could be done, if that could be achieved, then I think we can do a lot, a lot for the betterment of humanity, and that's why we have got realization. It's not only for yourself, it's not only for your family, it's not only for your city or country, but for the whole world Sahaja Yoga is going to work out.

Now, if you have to do competition, you must only do competition in your ascent and in nothing else. But people are so superficial that they think by showing off or by becoming something - a big Johnny - they will achieve something of a very great level: is not so. It has to be a very humble attitude towards yourself also, so that you understand that whatever you are doing is for the betterment of global problems. Absolutely we can solve because you are the channels of the Divine. If I could do it



alone, I would have done it. But I can't, so that's why I had to gather you all and to tell you that you become all the channels. But in the meanwhile, you enjoy. You enjoy life. Every second becomes a joy, which is also the gift of Shiva. Shiva is the one who creates this great admiration and great appreciation of every moment, everything that is there. And that is the state we have to achieve, by not condemning yourself, or not by pampering your ego, but by seeing what you are. That's the main thing one has to see – what problem you have, and what is troubling you is yourself only. If you could just come to that point of understanding, I am sure, I am very, very sure that you will be such an asset to help to make this world look at itself and change. Because superficially you cannot change such deep rooted problems. And, you are being so blessed by Kundalini that you can really become a great torch, I should say, torch on the path of truth, love and joy.

May God bless you.

# ENGLISH TRANSLATION

## (Hindi Talk)

Scanned from English Divine Cool Breeze

Shiva is the reflection of Sadashiva. Shiva's form is in our heart all the time in the form of our spirit. It resides there. I would not say it is enlightened. When the Kundalini is awakened, then this Shiva gets awakened and this gets awakened in our nerves. Chaitanya is said to be 'Medha Sthiti'.

First our heart and our brain get connected. Otherwise, ordinarily a person's brain goes one way and the mind runs the other way. When this union takes place, the light that is there within us, which comes from our spirit, flows in the form of Chaitanya from our heads and our fontanel bone area. What we have to understand further is that when this light comes within us, then gradually we see that our life changes. Our anger and other vices, start vanishing. Gradually all these things drop off and devotion is established within us. In devotion, a sense of detachment awakens. Nothing is important any more.

The form of Shiva is highly evolved. He is not bothered about anything. His hair is dishevelled, he is not bothered about the type of clothes he is wearing, what he should do. All this work he has given to Vishnu. He is himself detached from all this. His vehicle is Nandi who cannot in any way be tamed. Wherever it takes, Shiva goes there. Shiva is never bothered about what people might say, because he is contained within Himself. When he came for his wedding Shri Vishnu saw him and thought, "How could he be bridegroom for my sister?" But Parvati knew that it was only he who was worthy of her.

He was a happy-go-lucky type of person. He was not bothered about anything. When one rises above everything, then for Him everything is alike. His attention never goes there. This form of Shiva that we see, we find very endearing.

When the Shiva tattwa gets awakened in Sahaja Yogis, their life also starts changing. When people come to Sahaja Yoga, both men and women, are very fond of dressing up. All the attention is on what they should wear. There are many beauty clinics and things and women are very caught up in all this. But when, by getting enlightened, you become beautiful from within, then all these things cease to be important and one looks only for the comfort of the spirit. One stays away from bodily comforts. See these foreign Sahaja Yogis, they live in big houses, they have cars and everything, but when they come here, they are contented within themselves. It's not so with Indians. Indians now also, wherever they travel, they need attached bathrooms and all sorts of things. Still, they are not able to rise above all this. I am surprised to find that in a poor country like India people still have so many desires left. These people said, 'Mother, take a big

place for an ashram.' Our Indians never live in an ashram. When we made this ashram, with such hard work and a lot of expenditure, nobody was prepared to live in it. We said we will pay you a salary to live in it, still they were not prepared. For My birthplace, Chhindwara, we spent so much money and I said that retired Sahaja Yogis should stay there, the climate is very nice, it's a hill station. But nobody is prepared to go. Everybody is bothered about their comfort. My house, my place, my wife, my food should be cooked in this manner. They will eat only special kind of food. We Indians are so conditioned up by our tastes; with the foreigners it is not so. By meditation until we overcome all this, we cannot ascend.

In the matters of sacrifice, we lag behind. For the purchase of land, for NGO project, Sahaja Yogis were asked to pay a little more puja money. But there was a lot of hue and cry, complaints and all that. I have been doing everything without taking any money from you. How does it matter if you give a little more money for a noble cause? I have seen many sacrificing people in My lifetime, but, nowadays, this spirit couldn't be seen. I don't see it nowadays. I know about My mother, if she had even one saree more than six, she would give it away. When, people come to Cabella, I am surprised, they want separate rooms, they do not want to stay with everyone. One who cannot be collective, cannot be a Sahaja Yogi. He still thinks, 'I am special, I must have some special arrangements'. He is a Sahaja Yogi in name only. One who worships Shiva, he should be like Shiva. You make him sleep anywhere, give him anything to eat, one who is not bound by time, is not bound by anything, only such a person is Sahaja Yogi. And you have Shivji's 'Pradurbhava' (manifestation) in you. But to attain this, God knows, what Tapasya people undergo, and anywhere you go they will snatch all your money and what not. It is not so in Sahaja Yoga. But this 'Vriti' (tendency) that we have in ourselves, we should give up. We should try and see what all we can give up. Until you do not get this 'masti' (ecstasy) within you, you cannot be called a worshipper of Shiva.

Mataji has all types of worshippers, there is nothing special about that. Whatever they do, a Mother is a Mother, Mother will forgive them. But by being forgiven, you cannot reach that state. In forgiveness the most important thing is that one should always ask for Shiva's forgiveness because we are at each step doing things we should not be doing. So we should ask for forgiveness from Shiva Shambhu. We make this mistake and that mistake, we have this need and that need—till we have these needs within us, we should keep asking forgiveness from God. This feeling of possessiveness—my house, my wife—until we can overcome this, we cannot be Shiva Bhaktas. In this regard, it is very surprising that while foreigners who have never heard of Shiva's name have benefitted so much, we are still caught in small things and consider that so important. To be Shiva means that the hatred and negativities that are there within us, we should give them up. But even after coming to Sahaja Yoga, people are unable to see themselves. I have heard there is



a mother-in-law who is ill-treating her daughter-in-law. When I asked her why she is doing so she said, 'I have never ill-treated anyone.' Really? They will go to the cinema and see a mother-in-law ill-treating her daughter-in-law and start crying, but they will come home and do the same thing. Or, the daughter-in-law will ill-treat the mother-in-law and will say that 'I have never ill-treated anyone'. Without being truthful within, you cannot ascend in Sahaja Yoga.

Sahaja Yoga changes your life, you have become pure like gold, and gold cannot be tarnished. Now you have become that, reached that state. Why is it that you are still slaves of these innumerable things in this world? This is the speciality of Kundalini, that it cleanses you completely. Now, service. Yes, you should do service too, but I really do not require any service from you. I am self contained. What are you going to do for Me? The only thing is that you should also be self contained and enjoy yourself. In that state of joy, you should think that all these things are meant for enjoyment and that by doing Sahaja Yoga when you are already in that state of joy, then why do you need to do all this?

After much brooding, I have come to the conclusion that Sahaja is very simple and that's why it is very difficult. If somebody is there standing with a stick and saying, 'alright now shave off your heads, wear saffron clothes', hunger strike for 14 days, then it will be alright. But accepting Sahaja with heart, mind and brain, one should condemn one's misdeeds and improve oneself. Why do I do like that? Should have I done that? By doing this, you will be able to give up many bad things and find that you are 'Samartha' (Capable). You have no needs, no desires, you are sitting comfortably. And it is surprising that when the Chaitanya knows that you require nothing then it will serve you a platter full of everything. May be that it is to tempt you. There is no need of yours that it cannot fulfil.

Today we did so much 'Avahan' (invocation) of Shivji and he actually likes this sort of people. The difference between Him and Me is that I like all sort of people. He only likes those kind of people who have given up all this. We have these conditionings for everything—we should wear this type of clothes. If we don't, so what? But in Sahaja, Sanyas is not from the outside, but from within. From within, you become a Sanyasi and then no desire remains. Wherever you are, you are joyful. First there were 'Nath Panthis', they used to wander all over and they taught people a lot of things. I am surprised, how much these people travelled! When I went to Colombia I found out that these people had even reached Bolivia. When you go to Colombia in an aeroplane you feel giddy, it is at such a height, and at that time people used to go on foot. So I don't understand how these people might have reached there. In Russia also and other countries they travelled. How they lived, how they travelled all over, what they wore, no-one knows! Because you reach that state where you become a miraculous person, like 'Shirdi Sainath'. He appears anywhere, helps anyone. People say, 'Mother, we saw him'. I say, 'Yes, it is possible'. Such people become immortal because the killing tendencies in them get finished and that make them mortal. They become immortal. And to achieve this immortality is the real puja of Shivji.

# HINDI TRANSLATION

## (English Talk)

मैं इन लोगों से (भारतीय) श्री शिव की पूजा की बात कर रही थी। आपके साथ क्या घटित होना चाहिए? आज मैं आपको बताऊंगी कि जब आपको आत्मसाक्षात्कार होता है तो हमारे अन्दर क्या घटित होता है। यहाँ ग्यारह रुद्रों का स्थान है, वे श्री शिव की शक्तियों के अंश हैं और हमारे अन्दर जीवन के प्रति जो मिथ्या विचार हैं उन्हें निकाल फेंकने के लिए वे सब प्रयत्नशील रहते हैं। जब कुण्डलिनी की जागृति होती है तो वे सब जागृत हो जाते हैं। उदाहरणार्थ बुद्ध और महावीर भी उन्हीं का एक हिस्सा हैं। वे सभी हमें बुराइयों में फँसने से रोकते हैं। मान लो हममें अहं है तो बुद्ध इसको नियंत्रित करेंगे और ये देखेंगे कि अपने अहं से आपको सदमा पहुँचे। इस सदमे के पश्चात् आप हैरान हो जाते हैं कि इतने अहंकारी, अपमानजनक और ओछे, आप किस प्रकार हो सकते हैं। परन्तु जब यह रुद्र जागृत नहीं होता, जब इसमें प्रकाश नहीं होता तब क्या होता है? तब आप अपने कार्यों को न्यायसंगत ठहराने लगते हैं। आप सोचते हैं कि जो भी कुछ आप करते हैं वह ठीक है। जो भी कुछ आपने किया, जो भी कुछ आपने कहा, जो भी आपने प्राप्त किया, आप सोचते हैं कि वह आपका अधिकार है तथा आपने कुछ गलत नहीं किया। इसके लिए रुद्र रूपी बुद्ध का जागृत होना आवश्यक है। इसके विपरीत यदि आप अहंकारी बनते चले जाएं तो आप पूर्णतः आक्रामक व्यक्तित्व बन जाएंगे। आप जानते हैं कि ऐसे व्यक्ति की क्या निशानियाँ हैं।

मात्र देखें और अन्तर्दर्शन करें और स्वयं के लिए देखें कि अहं ने आपको क्या हानि पहुँचाई है। स्वयं के विषय में आपके कितने गलत विचार थे। इसी कारण मोहम्मद साहब ने कहा था कि जूतों से अपने अहं की पिटाई करो। अहं को रोकने की कोई और विधि उनकी समझ में नहीं आई। यह अहं वास्तव में आपके मस्तिष्क का विस्फोट कर सकता है और आप भिन्न कठिनाइयों में फँस सकते हैं। परिणाम स्वरूप मैंने देखा है कि लोग युष्पीज रोग ग्रस्त हो जाते हैं जिसमें चेतन मस्तिष्क बिल्कुल बेकार हो जाता है, व्यक्ति हिल भी नहीं सकता, चेतन अवस्था में वह हिल-डुल नहीं सकता परन्तु अचेतन स्थिति में वह हिल-डुल सकता है। यह रोग इतना भयंकर है कि व्यक्ति रेंगने वाले जीव की तरह से हो जाता है। ऐसे लोगों को कंधे पर लाद के ले जाना पड़ता है, स्वयं तो वे चल भी नहीं सकते, बैठ भी नहीं पाते। बहुत ही छोटी उम्र में ऐसा हो सकता है। अमेरिका में ऐसा हुआ है और भारत में भी मैंने ऐसे कुछ रोगी देखे हैं। अतः यदि आप अपने अहं का ध्यान नहीं रखते, इसे नियन्त्रित नहीं करते इस पर आपको पश्चाताप नहीं होता (यद्यपि सहजयोग में पश्चाताप जैसी कोई चीज़ नहीं है क्योंकि हमें विश्वास है कि आपको आत्मसाक्षात्कार प्राप्त हो गया है और आप गलतियों से परे हैं) तो आपको परेशानी हो सकती है। अपनी गलतियों पर हमें पश्चाताप होना चाहिए। अंग्रेजी में एक शब्द है (वैततल) मुझे खेद है हर चीज़ के लिए खेद है, फोन उठाते हुए भी वे कहते हैं मुझे खेद है। हर चीज़ के लिए वे कहते हैं मुझे खेद है। काहे का खेद? परन्तु यह खेद भी अर्थहीन है इसमें कोई गहनता नहीं। मुझे खेद है कहते हुए आपको देखना चाहिए कि आप ऐसा क्यों कह रहे हैं और कौन सी त्रुटि का सुधार होना आवश्यक है।

आज की पीढ़ी में बहुत बड़ी समस्या यह है कि उसमें भयानक अहं विकसित हो गया है क्योंकि हमारी सारी

आर्थिक उन्नति ने, औद्योगिक विकास ने बड़ी-बड़ी संस्थाओं ने हमें एक मार्ग दिया है कि हम अपने अहं को विकसित करें। बताया गया है कि यदि हम अपने अहं को विकसित नहीं करते तो हम खो जाएंगे, कहीं के नहीं रहेंगे। इस प्रकार हम अहं को बढ़ावा देने लगते हैं तथा दाईं ओर की समस्याएं आरंभ हो जाती हैं। तब प्रतिक्रिया के रूप में इसका प्रभाव बाईं ओर पर पड़ता है। वास्तव में बाईं ओर का स्थान हमारे सिर में दाईं तरफ है तो हमारा अहं बाईं आज्ञा में आ जाता है। श्री महावीर बाईं ओर के रुद्र हैं। अहंवाश होकर लोग पापमय, अनुचित कार्य करते हैं जो श्री गणेश के विरुद्ध हैं। श्री महावीर जी की शक्तियाँ नियंत्रण करती हैं, वे कहते हैं कि तुम नर्क में जाओगे, ऐसा होगा। उन्होंने सभी प्रकार के नर्कों का वर्णन किया है तथा आपको डराने के लिए बताया है कि आप नर्क में जाओगे जहाँ आपको जिन्दा जलाया जाएगा, आदि-आदि। परन्तु इससे कोई लाभ नहीं होता और लोग बाईं ओर को, इस रुद्र की ओर, झुकने लगते हैं तथा ये रुद्र मजबूर हो जाता है और ऐसे व्यक्ति को भयंकर उदासीनता रोग हो जाता है। व्यक्ति भयंकर उदासीन हो जाता है। हे परमात्मा! मुझे यह कैसा रोग हो गया है? मैं इतना बीमार हूँ आदि, आदि। अपनी उदासीनता से आप अन्य लोगों को डराने लगते हैं, आप भावनात्मक भय-दोहन करने लगते हैं, अपना सिर पीटते हैं आदि, आदि। ऐसा अहं के कारण भी हो सकता है और बाईं ओर की समस्याओं के कारण भी।

ये दोनों रुद्र बहुत महत्वपूर्ण हैं क्योंकि इन दोनों का सम्बन्ध सीधे हमारी बायीं और दायीं अनुकम्पी प्रणाली से है। अतः यह आवश्यक है कि इनको ठीक करते हुए आप इन दोनों रुद्रों के शिकार न बन जाएं। इन रुद्रों का संतुष्ट होना आवश्यक है। अतः सामान्य होने के लिए इन दो रुद्रों का ध्यान रखना आवश्यक है क्योंकि इनमें से एक अहं का नियंत्रण करता है दूसरा आत्मग्लानि का। मैं ऐसा नहीं कर सकती। इस प्रकार के उदासीनता आदि रोगों का शरीर पर भी गंभीर प्रभाव पड़ता है, इससे कैंसर तक हो सकता है। यदि ये रुद्र पकड़ जाएं तो व्यक्ति को कैंसर हो जाता है। आज्ञा में मेधा सूज जाती है। पूरा हिस्सा ही सूज जाता है। किसी कैंसर के रोगी को आप देखें तो उस पर सूजन दिखाई देगी, कम से कम मस्तक के बायीं या दायीं ओर। व्यक्ति के स्वभाव में इतना दोलन होता है कि कहा नहीं जा सकता कि कौन से रुद्र से आपने मनोदैहिक रोग ले लिए हैं।

सभी प्रकार के मनोदैहिक रोग रुद्रों के प्रभावहीन हो जाने के कारण, उदासीन या निष्ठुर स्वभाव के कारण भी होते हैं। यह बहुत से अन्य कारणों से भी हो सकते हैं। परन्तु यह सभी कारण श्री शिव या सदाशिव की शक्तियों के अंग-प्रत्यंग ही होते हैं। श्री शिव करुणा से परिपूर्ण हैं, वे करुणा के सागर हैं। आप यदि उनसे क्षमा माँगें तो वे क्षमा कर देते हैं, चाहे जो भी अपराध आपने किया हो। परन्तु यदि आप सोचते हैं कि आपने जो भी किया अच्छा किया, आपने कभी किसी को परेशान नहीं किया, किसी को दुःख नहीं दिया तो ये सब जानते हैं। शिव सभी कुछ जानते हैं और अपनी जानकारी के कारण वे त्यागने लगते हैं, आपको आपके भाग्य पर छोड़ देते हैं। अतः आपकी अपनी इच्छा शक्ति तथा शिव के आशीर्वाद का बहुत बड़ा योगदान है। जब शिव आपको आशीर्वादित करते हैं तो आपकी इच्छा शक्ति भी बहुत उच्च हो जाती है। परन्तु ये जानने के लिए कि आपको अत्यन्त उच्च स्तर का व्यक्ति होना है। आपमें पूर्ण इच्छा शक्ति होनी चाहिए वे बिल्कुल सांसारिक किस्म के नहीं हैं। मान लीजिए कि श्री शिव को किसी पार्टी आदि में जाने के लिए कहा जाए तो वे कैसे लगेगे? वहाँ लोग उन पर हँसेंगे। मैं जब कुछ हिप्पियों से मिली और उनसे पूछा कि तुम इस प्रकार के बेतुके बाल क्यों रखे हुए हो? उन्होंने उत्तर दिया कि हम आदि मानव



बनना चाहते हैं। मैंने कहा कि आपका मस्तिष्क तो आधुनिक है, आदि मानव की तरह बाल रखने का क्या लाभ है?

तो धोखा, स्वयं को धोखा देने से कोई लाभ न होगा। सबसे अच्छी बात तो ये होगी कि स्वयं का सामना करें और समझें कि आप क्या गलतियाँ करते रहे हैं? यदि ऐसा हो जाए, और जितने भी सहजयोगी यहाँ बैठे हैं, मैं आपको बता दूँ, यदि आप स्वयं को सुधार लें और शिव सम बन जाएँ तो मुझे पूर्ण विश्वास है कि सभी समस्याएं, राजनीतिक, आर्थिक तथा अन्य सभी प्रकार की समस्याएं समाप्त हो जाएंगी। परन्तु आज कलियुग के कारण ऐसा वातावरण बन गया है कि अच्छे-बुरे सभी प्रकार के लोग चले जा रहे हैं। अब हमारी जिम्मेदारी है कि विश्व की रक्षा करें, एक अत्यन्त सम्माननीय जीवन की सृष्टि करें जो दिखावा मात्र (सतही) न हो। यह अन्दर से इस प्रकार विकसित हो कि आपकी आत्मा का प्रकाश फैले और पूरे विश्व को प्रकाशित करे। यह समझना अत्यन्त आवश्यक है। ये सब कष्ट, रोग, मनोदैहिक रोग तथा अन्य सभी समस्याएं जैसे, राजनीतिक, आर्थिक तथा अन्य समस्याएं मानव की बनाई हुई हैं। सामूहिक रूप से ये कलियुग की देन है। परमेश्वरी शक्ति ने इन्हें नहीं बनाया। अतः यदि बहुत से सहजयोगी हों, जो सत्यनिष्ठापूर्वक सहजयोग कर रहे हों, तो यह परमेश्वरी शक्ति इन्हें निष्प्रभावित करने का प्रयत्न करती है। यदि ऐसा हो जाए, यदि ये उपलब्धि हम पा सकें तो, मैं सोचती हूँ, हम बहुत कुछ कर सकते हैं- मानव के हित के लिए बहुत कुछ। इसी कारण आपको आत्मसाक्षात्कार प्राप्त हुआ है। ये केवल आपके लिए ही नहीं है, केवल आपके परिवार के लिए ही नहीं है, केवल आपके नगर या देश के लिए ही नहीं है परन्तु यह पूरे विश्व के लिए है।

सहजयोग कार्यान्वित होगा। आपने यदि परस्पर मुकाबला करना है तो उत्थान में करें, और किसी चीज़ में नहीं। परन्तु लोग इतने उथले हैं कि वे सोचते हैं कि दिखावा करने से या अपने आपको बहुत बड़ी चीज़ मान बैठने से वे उत्थान का बहुत ऊँचा स्तर पर लेंगे। परन्तु ऐसा नहीं है। स्वयं के प्रति भी अत्यन्त विनम्र दृष्टिकोण होना चाहिए ताकि आप समझ सकें कि आपके सभी कार्य ब्रह्माण्डीय समस्याओं के समाधान के लिए हैं। निःसन्देह आप इन समस्याओं का समाधान कर सकते हैं क्योंकि आप ही परमात्मा के माध्यम हैं। यदि मैं अकेली ये सब कार्य कर सकती तो मैंने कर दिया होता, परन्तु मैं ये कार्य करने में असमर्थ हूँ। इसीलिए मुझे आप सब लोगों को यह बताने के लिए इकट्ठा करना पड़ा कि आपको परमात्मा का माध्यम बनना होगा। परन्तु साथ ही साथ आप जीवन का आनन्द ले रहे हैं। आपका हर क्षण आनन्द बन जाता है। यह भी श्री शिव का ही वरदान है। शिव ही इस महान सराहना तथा हर क्षण की महान अनुभूति की सृष्टि करते हैं। यही स्थिति आपने प्राप्त करनी है, अपनी भर्त्सना द्वारा नहीं और न ही अपने अहं को बढ़ावा देकर, परन्तु ये देखते हुए कि आप क्या हैं। यही विशेष चीज़ है जिसे आपने देखना है, कि आपमें क्या बुराइयाँ हैं। आप स्वयं ही स्वयं को कष्ट दे रहे हैं। इस बात को यदि आप समझ लें तो मुझे विश्वास है, पूर्ण विश्वास है कि आप इतनी बहुमूल्य चीज़ बन जाएंगे जो पूरे विश्व के लोगों को, स्वयं को देखने और परिवर्तित होने में सहायक होगी। समस्याओं की जड़ें इतनी गहन हैं कि उथले स्तर पर रहते हुए आप परिवर्तित नहीं हो सकते। माँ कुण्डलिनी आपको इस प्रकार आशीर्वादित कर रही हैं। मैं कहूँगी, कि आप सत्य, प्रेम और आनन्द के मार्ग पर, वास्तव में, एक महान मशाल (ज्योति) बन सकते हैं।

परमात्मा आपको आशीर्वादित करें।

# MARATHI TRANSLATION

## (Hindi Talk)

Scanned from Marathi Chaitanya Lahari

शिव हे सदाशिवांचे प्रतिबिंब आहेत. शिव आत्मस्वरूपात आपल्या हृदयात सदैव प्रस्थापित आहेत; तिथे त्यांचा वास आहे. त्या स्थानी ते प्रकाशित आहेत असे मी म्हणणार नाही. कुण्डलिनीचे जेव्हा जागरण होते तेव्हा श्री शिव जागृत होतात आणि ते चैतन्य आपल्या नसामधून वाहू लागते. चैतन्यालाच “मेधास्थिति” असे नाव आहे.

सर्वप्रथम आपले हृदय व मेंदू जोडले जातात. सामान्यतः माणसाचा मेंदू आणि त्याचे मन विरुद्ध दिशेने कार्य करत असतात. हा योग घटित झाल्यावर आपल्या आत्म्याचा प्रकाश चैतन्यस्वरूपात आपल्या मस्तकामध्ये व टाळूमध्ये पसरू लागतो. त्यानंतर समजून घ्यायला हवे की हा प्रकाश आपल्याला मिळाल्यावर आपल्या जीवनात परिवर्तन घडून आल्याचे आपण पाहतो. आपला राग आणि वाईट सवयी कमी व्हायला लागतात, हळुहळू हे दोष पूर्णपणे गळून जातात आणि आपल्यामध्ये श्रद्धा प्रस्थापित होते. त्यातूनच अनासक्तपणाची भावना जागृत होते; इतर गोष्टींचे महत्त्व वाटेनासे होते.

शिवतत्त्व हे फार उन्नत झालेले रूप आहे. त्यांना कशाचीही पर्वा नसते. त्यांच्या केसांच्या जटा झालेल्या असतात. कपड्यांची त्यांना फिकीर नसते तसेच काय करावे हे भान नसते. हे सर्व काम त्यांनी विष्णूवर सोपवले आहे. आणि स्वतः त्यापासून पूर्णपणे अलिप्त झाले आहेत. त्यांचे वाहन नंदी आहे ज्यांना कुणीही माणसाळावत नाही. तो जिथे नेईल तिथे शिव जातात. आपल्या स्वतःमध्ये ते इतके पूर्णपणे स्थिरावले असल्याने लोक काय म्हणतील याची ते पर्वा करत नाहीत. ते जेव्हा विवाह करण्यासाठी आले तेव्हा विष्णूना वाटले “हा पुरुष माझ्या बहिणीचा पति

कसा काय?” पण पार्वतीला माहीत होते की तेच तिचा पति होण्यास लायक आहेत.

ते सदा-सर्वकाळ खूप प्रवृत्तीचे आहेत. त्यांना कसलीही पर्वा नाही. एकदा कौणी सर्व गोष्टींच्या पार गेला की त्याला सर्व गोष्टी सारख्याच वाटतात, त्यांच्याकडे त्यांचे चित्तच जात नाही. या स्वरूपामध्ये आपण शिवांना जेव्हा जाणतो तेव्हा ते लोभस वाटते.

सहजयोग्यांमध्ये शिवतत्त्व जागृत झाल्यावर त्यांचे जीवनही बदलते. सहजयोगात घेणारे लोक, पुरुष व महिला, दोघेजण आधी कपड्यालत्यांच्या बाबतीत हीशी असतात. त्यांचे लक्ष सदैव पेहरावाकडे. आज व्यूटि-पार्लरकडे खूप स्त्रिया जातात. त्याशिवाय चालत नाही. पण आत्मप्रकाश मिळाल्यावर जेव्हा तुम्ही आतून सुंदर वनता तेव्हा या सर्व बरबराच्या गोष्टी फालतू वाटायला लागतात आणि आत्म्याच्या सुखाकडेच तुमचे लक्ष लागते. शारीरिक सुख - आरामबद्दल तुम्ही उदासीन होता. आता हे परदेशातील सहजयोगी पहा. तिथे त्यांची धरे फार मोठी असतात, गाडी वगैरे त्यांच्याजवळ असते. पण ते आपल्याकडे आले की असेल त्यात समाधानी असतात. भारतीयांचे असे नाही; कुठेही प्रवासाला गेले की अटेंचड-बाथरूमपासून त्यांना सर्वकाही पाहिजे असते, अजूनही ते या गोष्टींपासून बर आलेले नाहीत. मला आश्चर्य वाटते की भारतासारख्या गरीब देशातील लोकांनाही भौतिक हाव अजून आहे. ते लोक म्हणतात “माताजी, आश्रमासाठी मोठी जागा घेऊ या.” आपले भारतीय लोक आश्रमात रहायलाच तयार नसतात. आपण हा आश्रम खूप कष्ट करून व पैसे खर्च करून बांधला पण इथे कुणाला रहायला



नको. आम्ही म्हटले की तुम्हाला खर्चाला सर्व पैसा पगार म्हणून देऊ तरी कुणी तयार नाही. आमच्या जन्मगावी. छिंदवाड्याला आम्ही खूप खर्च केला आणि वयस्कर निवृत्त सहजयोग्यांना रहायला सांगितले, तिथली हवा छान आहे. डोंगरावरचे स्थान आहे पण कुणीही जायला तयार नाही. सगळ्यांना आपल्या आरामाची काळजी-माझं घर, माझी जागा. माझं कुटुंब, माझं खार्ण-पिणं— एवढंच! खाण्यापिण्याच्या बाबतीतही फार चोखंदळ. आपल्या सवयीमुळे भारतीय लोक फार कन्डिशनड असतात. परकीयांचे तसे नसते. ध्यानामधून आपण या सर्वांपासून मुक्त झाल्याशिवाय आपली वाढ होत नाही.

त्याग करण्याच्या बाबतीत आपण मागे पडतो. एन्. जी. ओ. प्रकल्पासाठी जमीन खरेदी करण्यासाठी सहजयोग्यांना पूजा-वर्गणी वाढवायला सांगितले. लगेच त्यावर खूप प्रतिक्रिया, आरडाओरड झाली. तुमच्याकडून काहीही पैसे न मागता मी कार्य करत आले. पण एखाद्या चांगल्या कार्यासाठी तुमच्याकडून पैसे मागितले तर काय विघडले? सर्व त्याग करणारे अनेक लोक मी आयुष्यभर पहात आले पण आजकाल ती भावनाच नाहीशी झाली आहे. तसं कुठे पहायलाच मिळत नाही. माझी आई, सहा साड्यांच्यावर एकही ठेवत नसे. एक जरी जास्त आली तर देऊन टाकणार. कबेलामधे जे लोक येतात त्यांना स्वतंत्र खोली हवी असते, सगळ्यांच्या बरोबर रहायची इच्छाच नाही याचे मला आश्चर्य वाटले. जो सामूहिकतेत राहू शकत नाही तो सहजयोगी नाहीच. पण “मी मोठी विशेष व्यक्ति. माझी खास व्यवस्था हवी.” असा माणूस नुसता नावाचा सहजयोगी. शिवाची पूजा करणाऱ्यांनी शिवासारखे झाले पाहिजे. त्याला कुठेही झोपायला जागा द्या, काहीही जेवायला द्या, जो काळाच्या पलीकडे गेला त्याला कसलीही बांधिलकी नाही. असा माणूसच खरा सहजयोगी. तुमच्यामध्ये शिवांचा प्रादुर्भाव आला आहे. पण ही स्थिती मिळवण्यासाठी लोकांनी किती तपस्या केली देव जाणे. इतरत्र कुठेही जा, तुमच्याजवळचे सारे पैसे लुबाडतील काय काय तन्हा करतील, पण सहजयोगात तसं नाही. पण ही आपली प्रवृत्ति जायला हवी. आपण काय काय त्याग करू शकतो हेच पहात चला. ही ‘मस्ति’ जोपर्यंत तुम्हाला जाणवत नाही तोपर्यंत तुम्ही शिवांचे पुजारी गणले जाणार

नाही.

माताजींच्या जवळ सर्व तऱ्हेचे भक्त आहेत, त्यात काही विशेष नाही. तुम्ही काहीही केले तरी माताजी आई म्हणून क्षमाच करणार. पण क्षमा केली गेल्यावरही ती स्थिती तुम्हाला येत नाही. क्षमबद्दलची सर्वात महत्त्वाची गोष्ट म्हणजे प्रत्येकाने शिवांकडे क्षमायाचना करायला हवी कारण जे करायला नको तीच चूक आपण पुन्हा पुन्हा करत असतो. म्हणून आपण शिवांची (शिव-शंभू) क्षमा मागितली पाहिजे. आपण चुका करत राहतो, आपल्या गरजा भागवण्याचा प्रयत्न करतो - आपल्या गरजा जोपर्यंत संपत नाहीत तोपर्यंत आपण शिवांकडे क्षमायाचना करावी. हे हवे, ते हवे अशा गरजा- माझं घर, माझी पत्नी- जोपर्यंत संपत नाहीत तोपर्यंत आपण शिव-भक्त होत नाही. या बाबतीत परदेशीय लोक ज्यांनी शिवांचे नावही कधी ऐकले नव्हते, फार पुढे गेले आहेत. आपण अजून लहान-सहान गोष्टींनाच महत्त्व देत आहोत आणि त्यातच अडकून बसलो आहोत. शिवभक्त व्हायचे तर आपल्यामधील मत्सर आणि निगेटिव्हिटी आपण दूर केल्या पाहिजेत. पण सहजयोगात येऊनसुद्धा लोक स्वतःकडे पाहू शकत नाहीत. एक महिला आपल्या सुनेला अजूनही छळत असल्याचे मला समजले. मी तिला विचारले तर म्हणाली “मी कधीच कुणाला वाईट वागणूक दिली नाही.” म्हणजे बघा. त्या सिनेमा बघतील आणि सुनेला सासुकडून छळ झाल्याचे पाहून रडायला लागतील पण घरी येऊन पुन्हा सारा तोच प्रकार सुरू! तीच गोष्ट सुनेची; ती पण म्हणणार “मी कधीच कुणाला त्रास दिला नाही.” स्वतःशी आत्ममधून प्रामाणिक राहिल्याशिवाय सहजयोगात तुम्हाला गहनता येणार नाही.

सहजयोग तुमच्यामध्ये परिवर्तन घडवतो. तुम्ही आता सोन्यासारखे शुद्ध झाला आहात, सोन्याला कधी डाग पडत नाही. आता तुम्ही त्या स्थितीला आला आहात. मग तुम्ही गुलाम जगातील क्षुल्लक गोष्टींचे अजूनही कसे राहू शकता? हीच कुण्डलिनीची विशेषतः आहे, ती तुम्हाला पूर्णपणे स्वच्छ करते. आता सेवा-कार्य, आता तुम्ही सेवा केली पाहिजे. मला तुमच्या सेवेची तर मुळीच जरूर नाही. मी स्वतःशी समाधानी आहे. मग माझ्याकरता तुम्ही काय करणार? एवढंच करा की तुम्ही पण ते समाधान मिळवा आणि त्याचा आनंद उपभोगा त्या आनंदाच्या स्थितीमधे



तुम्हाला कळेल की या सर्व गोष्टी तुम्हाला आनंद देण्यासाठीच आहेत. सहजयोगात आल्यावर ती स्थिति प्राप्त केल्यानंतर इतर गोष्टींची तुम्हाला गरज कशाला वाटेल?

खूप विचार केल्यावर माझे मत आता असे झाले आहे. सहजयोग अगदी सोपा आहे आणि म्हणूनच फार अवघड आहे. नाही तर पुणी तरी काठी उगारून तुमच्या मागे लागून "आता डोक्यावरचे केस काढा, भगवी वस्त्रे नेसा, चौदा दिवस खाणेपिणे नाही" असे म्हणू लागला तर ठीक होणार ! पण हृदयापासून, मनापासून व बुद्धि वापरून सहजयोग पत्करल्यावर आपले दोष व चुका सुधारून स्वतःला सुधारले पाहिजे. मी असं का केले. असं करायलाच हवे होते का असा सतत विचार करत करत पुष्कळ वाईट गोष्टी तुम्ही टाकून घाल आणि आपण 'समर्थ' असल्याचे तुम्हालाच कळेल. तुम्हाला कशाची गरज नाही; कशाची इच्छा नाही आणि आरामात बसला आहात आणि तुम्हाला काहीच नको असल्याचे कळल्यावर हे परमचैतन्य तुमच्यासमोर भरभरून ताट ठेवेल. कदाचित तुम्हाला मोहात पाडण्यासाठी सुद्धा तसे होईल. तुम्हाला गरज वाटेल आणि ती त्याच्याकडून पुरी होणार नाही असे होणारच नाही.

आज आपण शिवांना खूप आवाहन केले आणि त्यांना असेच लोक आवडतात. माझ्या आणि त्यांच्यामध्ये फरक असा आहे की मला सगळ्या प्रकारचे लोक आवडतात तर शिवांना ज्यांनी आपले दोष, सवयी, संस्कार सर्वांचा त्याग केला आहे असेच लोक आवडतात. आपल्या कण्डिशन्स अनेक आहेत. उदा. आपल्याला अमक्याच तऱ्हेचे कपडे हवे. ते नाही तर काय झाले? पण सहजयोगामध्ये 'संन्यास' वाह्यातून नसतो तर आपल्या आतमधून असतो. आतून 'संन्यस्त' झाल्यावर तुमच्या इच्छाच संपतात. कुठेही असलात तरी आनंदी असता. पूर्वी 'नाथ-पंथी' होते आणि ते दूर-दूरवर हिंडून लोकांना उपदेश देत असत. ते कुठे-कुठे गेले याचे मला आश्चर्य वाटायचे. मी कोलंबियाला गेले होते तिथे मला समजले की नाथपंथी बोलिव्हियालाही गेले होते. कोलंबियाचा विमान-प्रवास करताना तिथे विमान इतक्या उंचीवरून जाते की चक्कर यायला लागते आणि त्याकाळी हे लोक पायी तिथे गेले ! ते तिथे कसे पोचले असतील मला कळत नाही. ते रशिया आणि इतर देशांमधेही गेले होते; त्यांनी एवढा प्रवास कसा केला असेल, त्यांनी कपडे

काय केले असतील कुणाला ठाऊक! कारण ही स्थिति मिळाल्यावर तुम्ही सिद्ध - पुरुष बनता जसे शिरडीचे साईनाथ; ते कुठेही प्रकट व्हायचे, प्रत्येकाला अडचणीत मदत करायचे. काही लोक सांगतात "माताजी, आम्ही त्यांना पाहिले" आणि मी म्हणायचे "असे होऊ शकते." असे संत-लोक अमर असतात. आणि ती अमर-अवस्था मिळवणे हीच शिवांची खरी पूजा.

पुढील भाषण इंग्रजीतून झाले.

आज मी तुम्हाला सहजयोगानंतर आपली आतली स्थिती काय बनते त्याबद्दल सांगणार आहे. तुम्हाला आत्मसाक्षात्कार मिळतो तेव्हा एकादश-रुद्र आलेले असतात. ते शिवांच्या शक्तीचे अंश असतात आणि ते सर्व आपल्यामध्ये जीवनावदलच्या ठाण मांडून बसलेल्या चुकीच्या कल्पना काढून टाकण्याचे प्रयत्न करतात. बुद्ध व महावीर हे यापैकीच आहेत. कुण्डलिनीच्या उत्थानानंतर ते रुद्र जागृत होतात. ते सर्व जण आपल्याला नको त्या गोष्टींच्या प्रभावातून बाहेर खेचत राहतात. उदा. आपल्यामध्ये अहंकार असतो त्याच्याकडे बुद्ध लक्ष ठेवतात. ते असं काम करतात का आपणच आपला अहंकार जाणून भयचकित होतो; हे समजल्यावर आपल्याला आश्चर्याचा धक्का बसतो आणि त्यामुळे अपमानित व क्षुद्र वाटून घेतो. पण जेव्हा हा रुद्र जागृत नसतो, जेव्हा त्याच्यामध्ये प्रकाश आलेला नसतो तेव्हा काय होते? तर तुम्ही स्वतःचेच समर्थन करू लागता- आपण जे काय करतो. केले आहे, बोलून दाखवले आहे किंवा मिळवले आहे ते सर्व बरोबरच आहे असं समजू लागतो, आपले काहीच चुकले नाही असे समजतो. म्हणून या बुद्ध रुद्राचे जागरण व्हावे लागते.

याच्या उलट तुम्ही अहंकारालाच गोंजारत राहिलात, अहंकारीपणा गाजवू लागलात की तुम्ही पूर्णपणे उजव्या बाजूची व्यक्ति बनता आणि एकदा तसे झाले की तुमचे व्यक्तिमत्त्व कसे होते हे तुम्ही जाणताच अशा वेळी तुम्ही शांतपणे स्वतःला बघून आत्मपरीक्षण केले आणि अहंकाराने आपले काय नुकसान केले आहे, स्वतःबद्दलच्या काय काय चुकीच्या कल्पना आपल्या डोक्यात भरवल्या आहेत हे जाणून घ्या. त्यासाठीच मोहम्मदसाहेबांनी सांगितले की स्वतःवरच जोडेपट्टी करा. आणखी दुसरं ते काय सांगणार? कारण हा अहंकार तुमच्या डोक्यामध्ये स्फोट घडवून काय -



काय समस्या समोर आणील याचा भरवसा नसतो आणि शेवटी त्या माणसाला असा विचित्र रोग(Yuppies) हातो ज्या मुळे तुमचे मन आणीव अजिबात काम करेनासे होऊन निकामी बनते. जाणतेपणाने माणूस हालचाल करू शकत नाही, अजाणता हालचाल होईल पण जाणीवपूर्वक नाही होणार. हा रोग इतका भयानक आहे की माणूस सरपटणाऱ्या प्राण्यासारखा होतो. त्यांना अंगावर घेऊन जावे लागते कारण त्यांना चालणे शक्य नसते, स्वतःहून ते चालू शकत नाही किंवा खाली बसू शकत नाही, हा रोग तरुण वयातही होऊ शकतो.

म्हणून स्वतःच्या अहंकाराकडे लक्ष ठेवा, त्यावर नियंत्रण ठेवा आणि त्या दोषाबद्दल क्षमाशील व्हा. सहजयोगामध्ये आपल्याला पश्चात्ताप वाटत नाही हा प्रकार नाही कारण आपला विश्वास असतो की आपल्याला आत्मसाक्षात्कार झाला आहे आणि आपण चुकीच्या गोष्टींपासून दूर आहोत. पण हे खरं नाही. आपल्याला पश्चात्ताप झाला पाहिजे. आता इंग्रजी भाषेमध्ये “सॉरी” हा प्रकार आहे. प्रत्येक गोष्टीबद्दल ‘सॉरी’ टेलिफोन उचलल्यावरसुद्धा ते म्हणणार “सॉरी”. मी म्हणते सॉरी कशाबद्दल? हा नुसता पोकळ शब्द आहे. त्याला अर्थ नाही आणि त्यात खोली (प्रामाणिकपणाची) पण नाही. तुम्ही सॉरी म्हणता तेव्हा काय चूक झाली म्हणून ते म्हणता आणि ती कशी सुधारणार इकडे बघा. आजकालच्या आधुनिक पिढीमध्ये हा मोठा प्रश्नच आहे कारण आपल्याकडील आर्थिक भरभराटीमुळे, औद्योगिक प्रगतीमुळे, मोठमोठ्या संस्थांमुळे आपला अहंकार वाढायला उत्तेजनच मिळत आहे. तसं नाही केले तर आपला तरणोपाय नाही. आपल्याला कुठेच किंमत राहणार नाही. म्हणूनच आपण अहंकाराचा वडेजाव मानतो आणि हे उजव्या बाजूचे प्रश्न चालू होतात. प्रतिक्रिया म्हणून मस्तकाच्या डाव्या बाजूवर त्याचा दबाव येतो. उजव्या बाजूला अहंकार बळावतो. डावीकडेचे रुद्र महावीर आहेत. म्हणून लोक चुकीच्या, अनैतिक गोष्टी करू लागतात जे श्री गणेशांच्या विरोधात असते.

महावीरांजवळ नियंत्रण करणाऱ्या शक्ति असतात. ते तुम्हाला नरकात जायला सांगतील. आणखी काहीतरी होईल, अनेक नरकयातनांचे वर्णन करतील, तुम्ही नरकात जाणार व जिवंत गाडले जाणार, असे तुम्हाला

घाबरवण्यासाठी काय काय वर्णने करतील मलाच सांगता येणार नाही. पण त्याचाही काही उपयोग होत नाही आणि लोक जास्तच डावीकडे झुकायला लागतात आणि या रुद्रांजवळ जातात. हे रुद्रही जेव्हा काही करू शकत नाहीत तेव्हा मात्र प्रचंड नैराश्य येते. अरे देवा, काय हे नैराश्य, मला काहीतरी झालंय असं म्हणू लागतात. त्यातूनच तुम्ही दुसऱ्यांना घाबरावून टाकता आणि त्यांच्या भावनिकतेला बदनाम करता; वेडेवाकडे चाले करू लागता आणि स्वतःचेच डोके बडवायला लागता. हे अहंकारातून किंवा डावीकडच्या समस्यांमुळे होते.

हे दोन्ही रुद्र आपल्या डाव्या व उजव्या सिंपथेटिक नर्व्हस-सिस्टिम बरोबर पूर्णपणे संबंधित असल्यामुळे फार महत्वाचे आहेत. म्हणून तुम्ही या रुद्रांच्या तावडीत पडणार नाही याबद्दल सतर्क राहिले पाहिजे; त्यांना प्रसन्न ठेवणे जरूरीचे आहे. म्हणून अहंकार आणि स्वतःचीच कीव करण्याची भावना यांच्यावर नियंत्रण करणाऱ्या या दोन्ही रुद्रांना तुम्ही सांभाळले पाहिजे म्हणजे तुम्हाला त्रास होणार नाही; तसेच ‘मला हे जमणार नाही, ते नको’ इ. तक्रारी व नैराश्य दूर होतील. कारण त्यांच्यामुळे पुढे फार गंभीर प्रश्न, कॅन्सरसारखे आजार होण्याची शक्यता असते. रुद्र पकडले गेले तर दोन्ही बाजूंना सूज येते. त्याला ‘मेधा’ म्हणतात. कॅन्सरचा माणूस पाहिलात तर त्याला सगळीकडे सूज आल्याचे दिसते; कपाळाच्या डाव्या किंवा उजव्या बाजूकडे तरी सूज आढळते. रुद्रांचा हा त्रास डावीकडून उजवीकडे किंवा उजवीकडून डावीकडे इतक्या नकळत झुकतो आणि त्या व्यक्तीच्या स्वभावात न समजण्यासारखे बदल फटकत्र दिसतात की कुठल्या रुद्राचा त्रास आहे हे सहजासहजी लक्षात येत नाही. मनोविकाराचे सर्व आजार हे दोन रुद्र काम करेनासे झाल्यामुळे होतात. सतत नैराश्य किंवा आक्रमकपणा या दोन्ही प्रवृत्तीमुळे असे त्रास होतात. त्याची आणखी काही कारणेही असू शकतात पण ते सर्व सदाशिवांच्या शक्तीचेच भाग असतात. त्यांचा स्वभाव करुणेने ओतप्रोत भरलेला आहे. करुणेचे ते सागरच आहेत. त्यांना नुसती क्षमा मागितली की लगेच क्षमा करतात. पण तुम्हाला जर असं वाटत असेल की तुम्ही जे काही करता ते योग्यच आहे. तुम्ही कधीच कुणाचा छळ केला नाहीत. कधीच कुणाला दुःख दिले नाही तर मात्र त्यांना सर्व काही



आधीच समजलेले असते. आणि ते जाणतात म्हणून ते त्याचा त्याग करू पाहतात.

त्या स्थितीत येण्याची तुमची प्रबळ इच्छा व शिवाचे आशीर्वाद एकमेकांना पूरक असतात. शिवाचे आशीर्वाद मिळाले की तुमची इच्छा अधिकाधिक प्रखर होत जाते. पण आपले व्यक्तिमत्त्व एका अत्युच्च स्तरावर नेणे आपल्या हिताचे आहे. हे जाणण्यासाठी तुमची इच्छाशक्ति पूर्णावस्थेला यायला हवी. ते स्वतः फालतू सामान्य माणसासारखे नाहीत. समजा शिवांना तुम्ही एखाद्या पार्टीला जाऊ असे म्हटले तर ते कसे दिसतील? तिथले लोक त्यांच्याकडे पाहून हसणारच.

मला काही हिप्पी लोक भेटले तेव्हा मी त्यांना विचारले "तुम्ही तुमचे कसे असे का ठेवता?" तर ते म्हणाले "आम्हांला आदिवासी बनायचे आहे." मग मी म्हणाले "तुमचा मेंदू आता प्रगत झाला आहे तर मग आदिवासीसारखे कसे ठेऊन काय उपयोग होणार आहे?" म्हणजे स्वतःची अशी फसवणूक करण्यात काही अर्थ नाही. सर्वांत चांगले म्हणजे आत्मपरीक्षण करून स्वतःचे काय चुकत आहे हे जाणावे. असे जर घडून आले, इथे बसलेल्या सर्व सहजयोग्यांनी तसे करून स्वतःला सुधारले तर राजकीय, आर्थिक आणि इतर सर्व प्रश्न सुटतील अशी माझी खात्री आहे. पण आजकाल या कलियुगामुळे असा प्रकार झाला आहे की अगदी खराब लोकांचीही चलती आहे.

जगाला वाचवण्याची जबाबदारी आपल्यावर आहे. जबाबदारी अशी की आपल्याला एक महान आदरणीय व्यक्ति बनायचे ज्यामध्ये वरवरच्या गोष्टी, नसता दिखारूपणा याला थारा नाही तर आतून अशी उन्नतावस्था मिळवायची की आपल्या आत्म्याचा प्रकाश आजूबाजूला पसरेल आणि या जगाला प्रकाशित करेल. हे समजून घेणे फार महत्वाचे आहे. आपले सर्व प्रश्न, मनोविकाराचे आजार, एवढेच नव्हे पण या कलियुगातील मानवाच्या सामूहिक जीवनामधील राजकीय व आर्थिक प्रश्न ही सारी परिस्थिती माणसांनीच बनवली आहे. ते काही देवाने निर्माण केले नाहीत; उलट परमेश्वरी शक्ति या सर्वांचे परिणाम सुसह्य करण्याच्या प्रयत्नांत असते. सहजयोग खऱ्या अर्थाने जगणारे पुष्कळ सहजयोगी जर तयार झाले, असे आपण

साध्य करू शकलो तर मला वाटते खूप मोठे कार्य होईल. सर्व मानवजातीच्या कल्याणाचे होईल आणि त्याचसाठी आपल्याला आत्मसाक्षात्कार मिळाला आहे. तुमच्या स्वतःकरता, तुमच्या कुटुंबाकरता, शहरापुरता किंवा देशापुरता नव्हे तर सर्व जगासाठी सहजयोग हे घडवून आणणार आहे.

तुमच्यामध्ये स्पर्धा असेल तर ती दुसऱ्या कशासाठी नसून आपल्या उन्नतीसाठी स्पर्धा हवी. पण लॉक इतके उधळ आहेत की त्यांना वाटते की वरवरचा देखावा करून किंवा आपण कोणी विशेष आहोत असे दाखून आपण काही विशेष असे मिळवू शकू. तुम्ही अशी नम्रता मिळवली पाहिजे, स्वतःही इतके नम्र बनले पाहिजे की तुम्ही जे काही कराल ते सर्व जगाच्या कल्याणासाठी आहे हे तुम्हालाच समजेल. आणि हे घटित होणारच आहे कारण त्यासाठीच तुम्ही या परमचैतन्याचे वाहक बनले आहोत. मी जर एकटी हें करू शकत असते तर मी केले असते पण तसे ते होणार नाही. म्हणूनच मी तुम्हाला एकत्र आणून सांगत असते की तुम्ही लोकच परमशक्तीचे वाहक बनायला हवे. पण तसे होतांनाही तुम्ही आनंद मिळवीत आहोत, जीवनांतील प्रत्येक क्षण आनंदाचा होत आहे आणि ही शिवांचीच कृपा आहे. जे काही घडत आहे, क्षणाक्षणाला जे महान कौतुकाम्पद व वाखाणण्यासारखे होत आहे ते सर्व शिवांकडूनच होत आहे. आणि स्वतःचा धिक्कार न करता किंवा अहंकागाचा बडेजाव न करता स्वतःला नीटपणे ओळखण्याची स्थिति तुम्हाला मिळवायची आहे. हीच फक्त महत्वाची गोष्ट आहे. तुम्हाला आता काय कमी आहे? तुम्हाला काय प्रश्न-अडचणी आहेत? अडचण हीच आहे की तुम्हीच तुमच्यामध्ये अडचणी निर्माण करत आहोत. तुम्ही जर हें जाणण्याची खरी क्षमता मिळवू शकाल तर तुम्ही साऱ्या जगाला तोच आदर्श दाखवू शकाल आणि जगामध्ये परिवर्तन घडवून आणाल अशी मला खात्री आहे. एरवी हे खोलवर रुजलेले प्रश्न वरवरच्या उपयांनी सुटणार नाहीत. कुण्डलिनी तुमच्यावर प्रसन्न झाली आहे आणि तुम्ही दीपस्तंभासारखा सत्याचा, प्रेमाचा आणि आनंदाचा प्रकाश सर्वांना देऊ शकाल.

परमेश्वराचे तुम्हांला अनंत आशीर्वाद.

